NAAC ACCREDITED "B++" (CGPA 2.89)

Yogoda Satsanga Mahavidyalaya

Jagannathpur, Dhurwa, Ranchi-834004

www.ysmranchi.net

ysmranchi4@gmail.com

Sem : SEC-1

Indian History ,Culture & An Introduction to Archeology

Course:MJ- 1

(NEP)

Lesson:पुरातत्त्व :विविध विज्ञानों से सम्बन्ध (भाग -१)

By : Dr. Amrita Dutta

Lecture No. 76

© All Copyrights are Reserved

This Video is an Intellectual Property of Yogoda Satsanga Mahavidyalaya, Dhurwa, Ranchi, Jharkhand

विविध विज्ञानों से सम्बन्ध

(i) मानविकी (मानव विज्ञान), (ii) प्राकृतिक विज्ञान

- पुरातत्त्व एवं मानविकी
- पुरातत्त्व एवं इतिहास
- पुरातत्त्व एवं भूगोल
- पुरातत्त्व एवं समाजशास्त्र
- पुरातत्त्व एवं कला
- पुरातत्त्व एवं नृत्ततत्त्व शास्त्र

विविध विज्ञानों से सम्बन्ध

पुरातत्त्व प्राक्लिपिक मानव इतिहास के विषय में जानकारी प्राप्त करने का एक मात्र साधन है अतएव पुराविद् सभ्यताओं एवं पुरावशेषों के अन्वेषण,

➢ उत्खनन, परिस्क्षण तथा पर्यवेक्षण सम्बन्धी कार्यों को परा करने के लिए ज्ञान की कई शाखाओं से साक्ष्यों के संकलन एवं व्याख्या के सम्बन्ध में सहायता लेता है।

➢इनके सहयोग से इसका अध्ययन आगे की ओर बढ़ता है तथा क्रम निर्धारण, तिथिकरण और समुचित विवेचना में इनकी महत्त्वपूर्ण भागीदारी होती है।

इस कार्य के लिए वह विशेष रूप से दो प्रकार के विज्ञानों से सहारा लेता है-

(i) मानविकी (मानव विज्ञान), (ii) प्राकृतिक विज्ञान

➢प्रथम प्रकार के विज्ञानों के अन्तर्गत वह इतिहास, नृतत्त्वशास्त्र, समाजशास्त्र, कला एवं भूगोल तथा प्राकृतिक विज्ञानों में भूतत्त्व शास्त्र, भौतिक शास्त्र, रसायन शीस्त्र, वनस्पति एवं प्राणिशास्त्र से सहयोग लेता है।

➢अतः इनके प्रति इसके सह-सम्बन्ध का ज्ञान आवश्यक है कि किस सीमा तक ज्ञाने की इन शाखाओं से पुरातत्त्व सम्बन्धित है।

पुरातत्त्व एवं मानविकी

परातत्त्व एवं इतिहास

➢यद्यपि परातत्त्व एवं इतिहास दोनों विषयों द्वारा भूतकालिक जानकारी प्राप्त होती है- तथापि दोनों में मौलिक विभेद है।

➢पराविदं इतिहास का अपेक्षाकृत संकुचित अर्थ ग्रहणं करते है, उनके अनुसार इतिहास उन कालो या मानव समूहों के सम्बन्ध मे अध्ययन करता है जो किसी-न-किसी प्रकार की लिपि का प्रयोग करते थे।

➢इतिहास के सामान्य ज्ञान के अभाव में पुरातत्त्व का अध्ययन किमपि सम्भव नहीं।

पुरातत्व जल पुरावशेषों के आधार पर मानव के अतीत का अध्ययन करता है वही इतिहास एतदर्थ मुख्यतः लिखित विवरणों एवं किंचित किंवदंती का आश्रय लेता है। पुरातत्त्व स्थान विशेष की सभ्यता एवं संस्कृति पर केन्द्रित होता है जबकि इतिहास व्यक्तियों पर। पुराविद् हेतु छोटी-सी वस्तु भी साक्ष्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण होती है
।

पुरातत्व एवं भूगोल

- अपने सांस्कृतिक विकास पर मानवं भौगोलिक परिस्थितियों से अत्यन्त प्रभावित होता है यहीं कारण है पुरातन मानव भौगोलिक परिस्थितियों से अपने को प्रभावित होने से न बचा सका।

- मागितिहासिक काल में जब मानव के भौतिक एवं सांस्कृतिक उपादान अत्यल्प थे, पृथ्वी तल पर घटित होने वाली भौगोलिक घटनाएँ उसके जीवन पर अत्यन्त प्रभावी हुई।

- भौगोलिक परिस्थितियों से लड़ने के लिए पुरातन मानव द्वारा किए जाने वाले उपाय ही परवर्ती मानव संस्कृति और सभ्यता के निर्माण के आधार बने।

भौगोलिक वातावरण की भिन्नता के कारण वहाँ निवास करनेवाले मनुष्यों के उपाय तथा आविष्कृत उपादान जो परिस्थितियों से लड़ने के लिए थे, भिन्न थे

- परिणामस्वरूप अलग-अलग क्षेत्रों की संस्कृतियों में भिन्नता आई। भौगोलिक परिवर्तनों के कारण अनेकशः स्थान विशेष पर एक संस्कृति का विनाश तथा कालान्तर में दूसरी संस्कृति का निर्माण हुआ

पुरातत्व एवं समाजशास्त्र

समाजशाख में मानव समाज की संरचना एवं उसकी विविध प्रकार की रीति-प्रथाओं एवं संस्कारी आदि का अध्ययन किया जाता है।

➢पुराविद् हेतु अतीत की सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाओं के स्वरूप की जानेकारी आवेश्यक है।

➢ मानव व्यवहार सामाजिक परम्पराओं के अनुरूप होता है अतएव सामाजिक पहलू किसी भी मानव सभ्यता का महत्त्वपूर्ण अंग होता है।

➢ अन्वेषित सभ्यता के सामाजिक संगठन, वर्गविभाजन, रीति- रिवाजों एवं प्रथाओं के प्रचलन आदि अन्यान्य प्रश्नों की व्याख्या पुराविद् तभी कर सकेगा जब उसे उसका समुचित ज्ञान होगा।

पुरातत्त्व एवं कला

➢

पुरातत्त्व के क्षेत्र में कलाकृतियों का ज्ञान भी अपेक्षित होता है। यद्यपि कि पुराविद् इन कलाकृतियों का अध्ययन कलाविद् की हैसियत से नहीं अपितु पुराविद् की दृष्टि से करता है

➢ तथापि कलाकृतियों को कलात्मक दृष्टि से नहीं देखता अपितु वह इस दृष्टिकोण से देखता है कि अमुक कलाकृतियाँ मानव जीवन के किस पक्ष का उद्घाटन करने में समर्थहै

➢तथा किसी कत्सकृत विशेष में ऐतिहासिक समस्याओं के समाधान की कितनी श्रमता है।

पुरातत्त्व एवं नृत्तत्त्व शास्त्र

मनुष्य की शरीर रचना का अध्ययन हम नृतत्त्वशास्त्र के अन्तर्गत करते हैं। इसमें मानव की शरीर रचना के साथ-साथ समाज संस्कृति तथा भाषा भी आते है।

➢चूंकि नृतत्त्वशास्त्र का मुख्यतः जनजातियों पर आधारित होता है। अतएव यह पुरातत्त्व को आदिम जनजातियों के आर्थिक जीवन में आखेट, कन्दमूल फलादि खाद्य पदार्थों के संचय की प्रकृति सम्बन्धी जानकारी प्रदान करती है।

➢ ये जनजातियाँ वर्तमान समाज में भी है. जिनका अपना गौरवशाली दीर्घकालिक अतीत है किन्तु इनके विकास के इतिहास की गति अत्यन्त धीमी होती है।

➢ पुराविद् भी नृतत्त्वशास्त्रियों के अध्ययनों के आधार पर उनकी सांस्कृतिक राती तथा विकास की दशा का आकलन करता है किन्तु उसका यह अध्ययन नृत्तत्त्वशास्त्री की भाँति न होकर एक वैज्ञानिक की हैसियत का होता है

➢जिससे किसी भी प्रकार की चूक की सम्भावना न रहे। ऐसा इसलिए कि जिन्हें पुराविद् आदिम जातियों मान बैठता है

Thank You